Unit-5 B.A Sem. I [redacted] MJC-1 History Major Course (1)

Indian Economic traditions

(a) आर्थिक विचार का इतिहास उन विचारों में विभिन्न विचारकों और सिद्धांतों के दर्शन का अध्ययन है जो बाद में प्राचीन दुनिया से लेकर 21वीं सदी में आज तक राजनीतिक अर्थव्यवस्था और अर्थशास्त्र बन गए। इस क्षेत्र में आर्थिक विचार धारा के कई अलग-2 स्कूल शामिल है।

दार्शनिक अरस्तु जैसे प्राचीन यूनानी लेखकों ने धन अर्जित करने की कला के बारे में विचारों की जांच की और सवाल किया कि क्या सम्पत्ति को निजि या सार्वजनिक हाथों में छोड़ना सबसे अच्छा है।

मध्य युग में, थॉमस एक्विनास ने तर्क दिया कि उचित मूल्य पर सामान बेचना व्यवसायों का नैतिक दायित्व था।

पश्चिमी दुनिया में, अर्थशास्त्र एक अलग अनुशासन नहीं था, बल्कि 18वीं-19वीं सदी की औद्योगिक क्रांति और 19वीं सदी के महान चिन्तन तक दर्शन का हिस्सा था, जिसने विश्व में आर्थिक विकास को गति दी।

भारतीय आर्थिक परम्पराएँ :-

(1) भौगोलिक पृष्ठभूमि :- भौगोलिक दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप एक विशेष इकाई के रूप में गठित है। प्रकृति ने इसे अतीत में अनेकानेक विनाशलीलाओं से बचाया है। भारत ही एक ऐसा विशाल देश है; जिसके भू-भाग उष्ण कटिबंध के भीतर और बाहर भी पड़ते हैं। जिसमें महाद्वीपीय भूमि भी है और प्रायद्वीपीय भी। इसमें कहीं केवल 5 इंच वर्षा होती है, तो कहीं 500 इंच। यह एक गर्म और नम

भौगोलिक

(2) → देश है; जहाँ उष्ण कटिबंधीय देशोचित विविध वनस्पति की सदा समृद्धि रहती है। साथ ही इसके कुछ भाग सपाट मरुभूमि भी है जिसकी जलवायु की तुलना उत्तर-यूरोप प्रखरता से की जा सकती है। इसमें जहाँ कोई बात एक क्षेत्र के लिए सत्य हो सकती है। वहीं दूसरे क्षेत्र के लिए असत्य भी। इसके स्थलाकृति में अद्भुत विविधता है। इसकी जलवायु शारीरिक और मानसिक दोनों चेतनाओं को जगाने वाली है।

प्रकृति ने अपने सागरों और पर्वतों के द्वारा भारत की एकात्मकता का वरदान दिया है। इसके प्राकृतिक भाग है—

कश्मीर :-

पंजाब (सप्तसिंधव) जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के मैदान से बना है।

गंगा का विस्तृत मैदान (उ०प्र० और बिहार), पर्वत-पार, ब्रह्मपुत्र घाटी, जिसमें आसाम और बंगाल का त्रिभुज क्षेत्र (डेल्टा) शामिल है।

मरुस्थल प्रदेश (राजस्थान) :- नर्मदा और ताप्ती का ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र (मालवा और उसका पर्वतीय मध्यप्रदेश), उक्त दोनों नदियों का निचला जलग्रहण क्षेत्र और मनोरम रूप से संलग्न प्रायद्वीप सौराष्ट्र या काठियावाड़ (गुजरात), दक्षिण (डेक्कन) का विशाल पठार, जो पश्चिमी घाटों के ऊँचे गिरिस्कन्धों से लेकर हैदराबाद तक और फिर वहाँ अलक्षित रूप में नतावनत होते हुए पूर्वी समुद्र तट तक चला गया है। इस क्षेत्र की सीमा रेखा ईस्वी० तीसरी शताब्दी के आन्ध्र साम्राज्य, बाद के बहमनी राज्य हैदराबाद रियासत की सीमा रेखा से समान अभिन्न है।

अवस्था के परिचायक है।

छठी शताब्दी ई० पू० से NBPW के टिकड़े, लोहे के औजार, नगरों के बनाव में ईंटों का प्रयोग, द्वितीय शहरीकरण की पुष्टि करता है। यहाँ से अब सिक्के, अभिलेख व अन्य पुरातत्व वस्तुएं भी प्राप्त प्राचीन भारत के आर्थिक जीवन के निर्माण में क्रमिकता लाने में बहुमूल्य सिद्ध होते हैं। जिनसे उनके उद्योगों, वाणिज्य, व्यापारिक केंद्रों, विदेशी व्यापारिक संबंधों आदि का पता चलता है।

भारत में सबसे प्राचीन आहत सिक्के हैं, जो विनिमय हेतु प्रयुक्त होते थे तथा आर्थिक दशा पर प्रभाव डालते थे।

दक्षिण भारत से प्राप्त रोम के सिक्के विदेशों के साथ व्यापार की पुष्टि करता है। वस्तुतः आर्थिक उन्नति की उच्चतम अवस्था को इंगित करता हुआ प्रतीत होता है।

(2) साहित्यिक स्रोत:- साहित्यिक स्रोतों में प्राचीन भारतीय इतिहास के आर्थिक दशा का प्रसंग प्राप्त होता है, जिनसे महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इनमें वैदिक साहि० सर्वप्रमुख है। ऋग्वेद से कृषि कार्य में प्रयुक्त औजारों व विधियों के विषय में जानकारी मिलती है। समुद्री मार्ग द्वारा व्यापार, वस्तु विनिमय स्वर्ण गाय एवं राजा के बलि लेने का वर्णन मिलता है।

→

(4) प्राचीन भारत अपने आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्धशाली देश था। यहाँ की जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और प्राप्त खनिज पदार्थ अनेक उद्योग-धन्धों को विकसित करने में सदैव अग्रणी रहे हैं। जिससे इसके आंतरिक व बाह्य व्यापार उन्नत तथा आर्थिक विकास की दर उत्कृष्ट अवस्था में थी। जिसकी पुष्टि कौटिल्य के अर्थशास्त्र व पेरिप्लस ऑफ दि इरिथ्रियन सी भी करते हैं।

प्राचीन भारत के आर्थिक इतिहास को जानने के कई स्रोत हैं जिन्हें मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशी साहित्य एवं यात्रा वृतांत

1. <u>पुरातात्विक स्रोत</u> → प्राचीन काल के आर्थिक अवस्था की जानकारी के लिए पुरातत्व प्रमाण एवं महत्वपूर्ण साधन है। लिल मद्रास के अनुसार ब्रूसफुट द्वारा उत्खनित बेलारी से प्राप्त पत्थरों के चिकने, सुगठ पॉलिशदार औजार ~~मानव~~ नव पाषाणिक मानव के आर्थिक जीवन के द्योतक हैं।

हड़प्पा सभ्यता से उत्खनित अन्नागार, गोदी, मजदूरों की बस्ती, अनाज पीसने की चक्कियों के लिए अनगढ़ धातु पिण्ड, कृषि व अनेक उद्योगों का ज्ञान एक विकसित आर्थिक अवस्था का बोध कराता है। वैदिक काल में ताँबे व अयस्क के साथ विभिन्न प्रकार के अनाज, मिट्टी के विभिन्न पात्र, शिकार व कृषि उपकरण उनकी उन्नतिशील